फरीदाबाद
मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

महीने में एक बार छापते हैं, 7000 प्रतियाँ फ्री बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर 248 1/- फरवरी 2009

आज उत्पादन का एक लेखा-जोखा

(इधर संकट-मन्दी की चर्चा ने कुछ प्रश्नों को फिर से उठाना आवश्यक बना दिया है। इस सन्दर्भ में हम अप्रैल 1998 के अंक से "हकीकत का खाका" फिर छाप रहे हैं। किन से बचना चाहिये और क्या-क्या कर सकते हैं पर विचार में सहायता के लिये यह सामग्री फिर से छापी जा रही है।)

फैक्ट्री किसकी ?

हर क्षेत्र में आज पैसों के जुगाड़ के लिये कर्ज की भूमिका बढ़ती जा रही है। कम्पनियों में लगे पैसों में तो 80 से 90 प्रतिशत तक पैसे कर्ज के होते हैं। जमीन, बिल्डिंग, मशीनरी, कच्चा व तैयार माल गिरवी रहते हैं। बैंक, बीमा, पेन्शन फन्ड, म्युचुअल फन्ड तथा अन्य वित्तीय संस्थायें कर्ज के मुख्य स्रोत हैं।

कम्पनी में लगे दस-बीस परसैन्ट पैसों का जुगाड़ शेयरों के जरिये होता है। शेयर होल्डरों में भी प्रमुख हैं बैंक, बीमा, म्युचुअल फन्ड जो कि पचास-साठ प्रतिशत तक के शेयरों पर काबिज होते हैं। बाकी के शेयर हजारों फुटकर शेयर होल्डरों के अलावा कुछ कम्पनियों के हाथों में होते हैं।

कम्पनी की मैनेजमेन्ट

कम्पनी के शीर्ष पर है बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स। इस टॉप मैनेजमेन्ट में दस-बीस डायरेक्टर होते हैं। कर्ज देने वाली संस्थाओं के नुमाइन्दे, शेयर होल्डर संस्थाओं के नुमाइन्दे, कम्पनियों के नुमाइन्दे, बड़े-बड़े रिटायर्ड सिबिल-मिलिट्री-कम्पनी अधिकारी, नामी-गिरामी वकील तथा जानी-मानी हस्तियाँ बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स में होते हैं। मैनेजिंग डायरेक्टर धुरी होता-होती है बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स की। कम्पनी में मैनेजिंग डायरेक्टर के कुछ पैसे लगे भी होते हैं तो वह कुल पैसों के एक प्रतिशत से भी कम होते हैं।

बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स वाली टॉप मैनेजमेन्ट और जनरल मैनेजर वाली फैक्ट्री मैनेजमेन्ट के बीच की कड़ी है मैनेजिंग डायरेक्टर।

इस प्रकार बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स-मैनेजिंग डायरेक्टर-जनरल मैनेजर-मैनेजर-सुपरवाइजर कम्पनी की मैनेजमेन्ट का सीढीनुमा ढाँचा है।

उत्पादन में हिस्सा-पत्ती

● एक नम्बर में

टैक्सों के रूप में सरकारें उत्पादन का आधे से ज्यादा हिस्सा ले लेती हैं। मुख्य टैक्स हैं : एक्साइज ड्युटी, कस्टम्स ड्युटी, सेल्स टैक्स, कारपोरेट टैक्स। और फिर, पानी पर टैक्स, बिजली पर टैक्स, टेलीफोन टैक्स, सम्पत्ति कर, चुँगी कर, रोड़ टैक्स आदि-आदि-आदि कदम-दर-कदम टैक्स ही टैक्स हैं।

कम्पनी द्वारा लिये कर्ज पर ब्याज के रूप में उत्पादन का दस-पन्द्रह प्रतिशत हिस्सा बैठता है।

उत्पादन का चार-पाँच परसैन्ट शेयर होल्डरों को डिविडेन्ड के रूप में जाता है।

उत्पादन का एक उल्लेखनीय हिस्सा (दस प्रतिशत के करीब) उत्पादन की बिक्री के लिये एडवर्टाइजमेन्ट, मार्केटिंग और ट्रेडर मार्जिन में खप जाता है।

मैनेजमेन्ट के ताम-झाम तथा मैनेजमेन्ट के लोगों के वेतन-भत्तों पर उत्पादन का दस परसैन्ट हिस्सा खर्च होता है।

कम्पनी को बढाने के लिये उत्पादन का दो-तीन प्रतिशत हिस्सा प्रयुक्त होता है।

● दो नम्बर में

बड़े सौदों में मोटी कट-कमीशन बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स, खास करके मैनेजिंग डायरेक्टर, के खातों में जाती हैं।

जनरल मैनेजर के स्तर पर लाखों रुपयों के कट-कमीशन वाले सौदे होते हैं।

पर्चेज-मार्केटिंग-परसनल-इन्सपैक्शन आदि डिपार्टमेन्टों के अधिकारियों के कट-कमीशन हजारों रुपयों में होते हैं।

उत्पादन का एक हिस्सा नियम-कानूनों के जँजाल में से राह देने के लिये

– प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, विभाग अनुसार मंत्री, विभाग व पद अनुसार बड़े सरकारी अफसरों को देना ;

– स्थानीय स्तर पर डी.सी., एस.पी., डी.एल. सी., एक्सीएन, क्षेत्रीय प्रोविडेन्ट फन्ड कमिश्नर, रीजनल ई.एस.आई. डायरेक्टर, लेबर इन्सपैक्टर, फैक्ट्री इन्सपैक्टर, थानेदार, बिजली बोर्ड जे ई, पी एफ इन्सपैक्टर, ई.एस.आई. इन्सपैक्टर को देना।........

उत्पादन का पन्द्रह प्रतिशत हिस्सा दो नम्बर में जाता है, कट-कमीशन-रिश्वत में खपता है।

● मजदूरों द्वारा किये जाते उत्पादन में से दो-तीन परसैन्ट ही मजदूरों के हाथ लगता है। और, उस पर भी यह-वह टैक्स की अनन्त छुरी चलती रहती है।

कम्पनियों की बैलेन्स शीटों पर गौर करने से उत्पादन की उपरोक्त हिस्सा-पत्ती नजर आती है। अलग-अलग कम्पनियों में मात्र उन्नीस-बीस वाला फर्क है।

उत्पादन में भूमिकायें

मैनेजमेन्ट का रोल

जहाँ तक हो सके, मैनेजमेन्ट की कोशिश होती है कि कम्पनी चले ताकि वेतन-भत्ते, ताम-झाम और कट-कमीशन का सिलसिला चलता रहे। इसके लिये आवश्यक है कि टैक्स, ब्याज और कट-कमीशन में उत्पादन के प्रमुख हिस्से की खपत के उपरान्त कम्पनी के बही-खाते मुनाफा दिखायें। यह कम से कम लागत पर अधिक से अधिक उत्पादन के चक्कर को अनिवार्य बना देता है। इसका मतलब है मजदूरों को कम से कम वेतन देना और उनसे अधिक से अधिक काम लेना मैनेजमेन्टों का कार्य है।......

लीडरी की भूमिका

मजदूरों की सतत कोशिश होती है कि कम से कम बोझा ढोना पड़े और अधिक से अधिक वेतन व अन्य सुविधायें हों। यह हकीकत मजदूरों और मैनेजमेन्टों को शत्रुतापूर्ण खेमों में बाँटती है। मजदूरों और मैनेजमेन्टों के बीच लगातार टकराव होना स्वाभाविक व अनिवार्य है। अपने पक्ष को मजबूत करने के लिये मैनेजमेन्टें विभिषणों की जमात पालती हैं जिनका आधार-स्तम्भ है लीडरी।

.....*(इधर इन दस वर्षों में फैक्ट्रियों में स्थाई मजदूरों की सँख्या सिकुड़ती आई है और अस्थाई व ठेकेदारों के जरिये रखे जाते मजदूरों की सँख्या बढती आई है। इससे फैक्ट्रियों के अन्दर लीडरी का महत्व घटता गया है। और, मजदूरों का बढता असन्तोष इस-उस फैक्ट्री की चारदीवारी से होते हुये समाज में व्यापक असन्तोष को बढा रहा है। फैक्ट्रियों के बाहर तीव्र होता व बढता-फैलता असन्तोष अनेक प्रकार की लीडरी को उभार रहा है। जब-तब कुछ प्रकार की लीडरी का दमन लीडरी की भूमिका को नहीं बदलता। लीडरी का काम ही है मजदूरों-मेहनतकशों की पहलों को रोकना-डुबोना।)*

सरकार का काम

उत्पादन का आधे से ज्यादा हिस्सा टैक्सों के रूप में सरकारें लेती हैं। इसलिये हर जगह की सरकारों का काम है उत्पादन को जारी रखने में आती रुकावटों को दूर **(बाकी पेज तीन पर)**

दर्पण में चेहरा-दर-चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

गुड़गाँव में

प्रिमियम मोल्डिंग एण्ड प्रेसिंग मजदूर : "185 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 8 से साँय 6½ और रात 11 से प्रातः 7 की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम मात्र 6½ रुपये प्रतिघण्टा। ई.एस.आई. व पी.एफ. 300 में से 100 की ही – वर्षों से काम कर रहे मजदूरों की नहीं। अब कम्पनी किसी ठेकेदार के खाते में नाम लिखवाने के लिये बहुत दबाव डाल रही है। सुपरवाइजर कहते हैं कि मजदूर कुछ नहीं कर सकेंगे क्योंकि मैनेजिंग डायरेक्टर गुरपाल सिंह प्रधान मन्त्री का दोस्त है। परसनल मैनेजर धमकी देती है कि श्रम निरीक्षक को बुला कर अभी हिसाब करवाती हूँ। फैक्ट्री में लैट्रीन गन्दी रहती हैं और किसी में किवाड़ नहीं तो किसी में कुण्डी नहीं।"

एस एण्ड आर एक्सपोर्ट्स श्रमिक : " 298 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में बोर्ड पर सुबह 9 से साँय 6 बजे ड्युटी लिखा है पर रात 8 बजे छोड़ते हैं। इधर जनवरी से आधा घण्टा भोजन का और 15 मिनट चाय का खा गये हैं। काम के दौरान पेशाब करने का समय दो बार रखा है और अन्य समय पेशाब पर दुर्व्यवहार करते हैं। क्रेता के प्रतिनिधि आने की सूचना पर मैनेजर क्लास ले कर हम मजदूरों को झूठ बोलने की शिक्षा देता है। जुलाई 08 से देय डी.ए. के 79 रुपये दिसम्बर 08 की तनखा तक भी नहीं जोड़े हैं।"

वैम हाईफैशन गारमेन्ट्स कामगार : " 488 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से।"

गार्ड : "रेलवे स्टेशन के पास कार्यालय वाली ***यूनीक सेक्युरिटी*** गार्डो से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के 3500 रुपये। काम करते कई महीने तक ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं। तनखा देरी से, दिसम्बर की 14 जनवरी को दी। और, खर्चे के नाम पर 500 रुपये देते हैं तो तनखा से 600 काट लेते हैं।"

पर्ल ग्लोबल वरकर : "446 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों को काम करते 10-15 दिन हो जाते हैं तब कार्ड बनाते हैं। बीच में काम छोड़ दिया तो 6-7 दिन किये काम के पैसे नहीं देते।"

गौरव इन्टरनेशनल मजदूर : "208 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में आजकल तीसों दिन सुबह 9½ से रात 12¼ तक काम करवाते हैं। जनरल मैनेजर कार्ड ले लेता है और जबरन ओवर टाइम पर रोकता है। महीने में 150 घण्टे ओवर टाइम। नौकरी छोड़ने पर बची हुई सवेतन छुट्टियों के पैसे अब नहीं देते – कहते हैं कि सरकार ने बन्द कर दिये हैं।"

धीर इन्टरनेशनल श्रमिक : "299 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में सिलाई कारीगरों ने काम बन्द करके दिसम्बर की तनखा 10 जनवरी को ली। बाकी मजदूरों को कम्पनी ने दिसम्बर का वेतन आज 22 जनवरी तक नहीं दिया है। सुबह 9 बजे काम शुरू करते हैं और रात 2 बजे तक रोज रोकते हैं। महीने में 200 घण्टे ओवर टाइम – भुगतान सिंगल रेट से। तीन ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों में हैल्परों की तनखा 2000-2200 रुपये। फैक्ट्री में ***गैप*** का माल बनता है। सुपरवाइजर और इनचार्ज गाली देते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. बहुत-ही कम मजदूरों के हैं।"

लारा एक्सपोर्ट कामगार : " 155 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 400 मजदूर सुबह 9½ काम आरम्भ करते हैं और महीने में 20 दिन रात 2 बजे तक काम करते हैं। फिनिशिंग विभाग में ठेकेदार के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 2500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। दिसम्बर की तनखा आज 22 जनवरी तक नहीं दी है।" ***चिन्टू क्रियेशन वरकर :*** "295 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में जनवरी 08 तथा जुलाई 08 से देय डी.ए. के पैसे नहीं दिये हैं। सिलाई कारीगरों की तनखा से ई.एस.आई. के नाम पर 150 रुपये काटते हैं, टेलरों की पी.एफ. है ही नहीं। हैल्परों के वेतन से ई.एस.आई. व पी.एफ. के 300 रुपये काटते हैं। घर से लौटने में देरी पर नौकरी से निकाल देते हैं और किये काम के पैसे भी नहीं देते – कहते हैं कि एक महीने बाद नहीं मिलते।" ***ईस्टर्न मेडिकिट मजदूर :*** " उद्योग विहार स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में कैजुअल वरकरों को दिसम्बर की तनखा 14 जनवरी को दी। और, हम कैजुअल स्टाफ कहे जाते 500 लोगों को दिसम्बर का वेतन आज 22 जनवरी तक नहीं दिया है।"

फरीदाबाद में

के. के. स्पन पाइप मजदूर : "तिगाँव रोड़, बल्लभगढ स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2400-2800 और ऑपरेटरों की 3000-3200 रुपये। रोज सुबह 8½ से रात 8 की ड्युटी और रात 2-3 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम सिंगल रेट से।"

ए.पी. फोरजिंग श्रमिक : "16/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में तनखा देरी से देते हैं – दिसम्बर की आज 15 जनवरी तक नहीं दी है। गाली बहुत देते हैं।" ***गार्ड :*** "दूसरी मंजिल, बी-57 नेहरु ग्राउण्ड में कार्यालय वाली ***मयुर सेक्युरिटी सर्विस*** गार्डो से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। महीने के तीसों दिन ड्युटी, त्यौहार की भी छुट्टी नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के 3500 रुपये देते हैं।"

शाही एक्सपोर्ट मजदूर : "आई पी-1 सैक्टर-28 स्थित फैक्ट्री में ***गैप, ओल्ड नेवी, टारगेट, स्पिरिट, हुगो बॉस*** आदि के लिये माल बनता है। इन क्रेताओं के प्रतिनिधि जब फैक्ट्री में आते हैं तब मैनेजमेन्ट हम मजदूरों को दस्ताने, मुँह पर टाँगने के कपड़े, अग्निशमन तथा प्राथमिक चिकित्सा में प्रशिक्षित के बिल्ले देती है। उस समय मैनेजमेन्ट रसायन छिपा देती है, दाग हटाने की गन छिपा देती है, जिस रजिस्टर में हर घण्टे का उत्पादन लिखा जाता है उसे छिपा देती है और हमें कहती है कि पूछने पर बोलना कि ओवर टाइम नहीं होता। जबकि, स्थाई मजदूरों को भी लगातार 24 घण्टे फैक्ट्री में रोक लेते हैं, अक्टूबर से अप्रैल के दौरान तो महीने में 250 घण्टे तक ओवर टाइम.... इसे कम्प्युटर से हटा देते हैं। हर समय निर्धारित उत्पादन बहुत ज्यादा रहता है। टारगेट के चक्कर में चाय नहीं पी पाते, पानी भी नहीं पी पाते। पानी-पेशाब के लिये टोकन भी लेना होता है – 150 मजदूरों के बीच एक टोकन। कार्ड रख कर टोकन लेना और ऐसा नहीं करने पर दो दिन गेट रोक देते हैं। सुपरवाइजर गाली देते हैं, कार्ड छीन लेते हैं और टारगेट पूरा करने पर ही छुट्टी मिलती है। निर्धारित उत्पादन पूरा करने के लिये ड्युटी के बाद दो घण्टे अतिरिक्त रुकना पड़ता है तो उसके लिये कोई ओवर टाइम नहीं देते। तबीयत खराब होने पर भी छुट्टी नहीं देते और छोटी-छोटी बात पर माफीनाम लिखवाते हैं....... कुछ मजदूरों को रोना आ जाता है। अत्याधिक काम, ज्यादा समय लगातार काम से हम बीमार पड़ते रहते हैं।"

हरियाणा सरकार द्वारा 01.07.2008 से निर्धारित कम से कम तनखा : अकुशल मजदूर (हैल्पर) 3665 रुपये (8 घण्टे के 141 रुपये)

ग्लोबल कैपेसिटर श्रमिक : " 30/8 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री के 400 मजदूरों में 300 की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। कम्पनी 10½ घण्टे को 8 घण्टे बताती है। नये हैल्पर को 2700 रुपये महीना देते हैं और भर्ती के लिये रिश्वत लेते हैं।" ***पोलीमेड वरकर :*** "सैक्टर-59 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में 1700 कैजुअल वरकर और एक ठेकेदार के जरिये रखे 300 मजदूर काम करते हैं। स्थाई मजदूर बहुत-ही कम हैं। ठेकेदार के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 2800 तथा ऑपरेटरों की 3250 रुपये और ई.एस.आई. व पी.एफ. 300 में 2-4 के हो सकते हैं।" ***(बाकी पेज तीन पर)***

ओसवाल इलेक्ट्रिकल्स कामगार : " 48 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 15 छोटे ठेकेदारों के जरिये रखे 200 मजदूरों में हैल्परों की तनखा 2000-2600 और मशीन चलाने वालों की 3000-3500 रुपये।"

श्री जी श्रमिक : " 593 सैक्टर-58 स्थित फैक्ट्री में ***शिवानी लॉक्स*** का जिंकप्लेटिंग का काम होता है। हैल्परों की तनखा 2400 रुपये, ई.एस.आई. नहीं।"

मितासो एप्लाइन्सेज कामगार : " 120 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2600 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

फ्रेन्ड्स ऑटो श्रमिक : "38ए तथा 52ए इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित पटे-कमानी बनाने वाली फैक्ट्रियों में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट रहती थी। ओवर टाइम सिंगल रेट से। नई फैक्ट्री में मई 08 से 8-8 घण्टे की दो शिफ्ट की और फिर 8 घण्टे की एक शिफ्ट। पुरानी फैक्ट्री में अक्टूबर 08 तक 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट चली और अब 8 घण्टे की एक शिफ्ट है। दोनों

दर्पण में चेहरा-दर-चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

गुड़गाँव में

प्रिमियम मोल्डिंग एण्ड प्रेसिंग मजदूर : "185 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 8 से साँय 6½ और रात 11 से प्रातः 7 की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम मात्र 6½ रुपये प्रतिघण्टा। ई.एस.आई. व पी.एफ. 300 में से 100 की ही – वर्षों से काम कर रहे मजदूरों की नहीं। अब कम्पनी किसी ठेकेदार के खाते में नाम लिखवाने के लिये बहुत दबाव डाल रही है। सुपरवाइजर कहते हैं कि मजदूर कुछ नहीं कर सकेंगे क्योंकि मैनेजिंग डायरेक्टर गुरपाल सिंह प्रधान मन्त्री का दोस्त है। परसनल मैनेजर धमकी देती है कि श्रम निरीक्षक को बुला कर अभी हिसाब करवाती हूँ। फैक्ट्री में लैट्रीन गन्दी रहती हैं और किसी में किवाड़ नहीं तो किसी में कुण्डी नहीं।"

एस एण्ड आर एक्सपोर्ट्स श्रमिक : " 298 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में बोर्ड पर सुबह 9 से साँय 6 बजे ड्युटी लिखा है पर रात 8 बजे छोड़ते हैं। इधर जनवरी से आधा घण्टा भोजन का और 15 मिनट चाय का खा गये हैं। काम के दौरान पेशाब करने का समय दो बार रखा है और अन्य समय पेशाब पर दुर्व्यवहार करते हैं। क्रेता के प्रतिनिधि आने की सूचना पर मैनेजर क्लास ले कर हम मजदूरों को झूठ बोलने की शिक्षा देता है। जुलाई 08 से देय डी. ए. के 79 रुपये दिसम्बर 08 की तनखा तक भी नहीं जोड़े हैं।"

वैम हाईफैशन गारमेन्ट्स कामगार : " 488 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से।" ***गार्ड :*** "रेलवे स्टेशन के पास कार्यालय वाली ***युनीक सेक्युरिटी*** गार्डो से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के 3500 रुपये। काम करते कई महीने तक ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं। तनखा देरी से, दिसम्बर की 14 जनवरी को दी। और, खर्चे के नाम पर 500 रुपये देते हैं तो तनखा से 600 काट लेते हैं।"

पर्ल ग्लोबल वरकर : "446 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों को काम करते 10-15 दिन हो जाते हैं तब कार्ड बनाते हैं। बीच में काम छोड़ दिया तो 6-7 दिन किये काम के पैसे नहीं देते।"

गौरव इन्टरनेशनल मजदूर : "208 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में आजकल तीसों दिन सुबह 9½ से रात 12¼ तक काम करवाते हैं। जनरल मैनेजर कार्ड ले लेता है और जबरन ओवर टाइम पर रोकता है। महीने में 150 घण्टे ओवर टाइम। नौकरी छोड़ने पर बची हुई सवेतन छुट्टियों के पैसे अब नहीं देते – कहते हैं कि सरकार ने बन्द कर दिये हैं।"

धीर इन्टरनेशनल श्रमिक : "299 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में सिलाई कारीगरों ने काम बन्द करके दिसम्बर की तनखा 10 जनवरी को ली। बाकी मजदूरों को कम्पनी ने दिसम्बर का वेतन आज 22 जनवरी तक नहीं दिया है। सुबह 9 बजे काम शुरू करते हैं और रात 2 बजे तक रोज रोकते हैं। महीने में 200 घण्टे ओवर टाइम – भुगतान सिंगल रेट से। तीन ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों में हैल्परों की तनखा 2000-2200 रुपये। फैक्ट्री में ***गैप*** का माल बनता है। सुपरवाइजर और इनचार्ज गाली देते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. बहुत-ही कम मजदूरों के हैं।"

लारा एक्सपोर्ट कामगार : " 155 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 400 मजदूर सुबह 9½ काम आरम्भ करते हैं और महीने में 20 दिन रात 2 बजे तक काम करते हैं। फिनिशिंग विभाग में ठेकेदार के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 2500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। दिसम्बर की तनखा आज 22 जनवरी तक नहीं दी है।" ***चिन्टू क्रियेशन वरकर :*** "295 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में जनवरी 08 तथा जुलाई 08 से देय डी.ए. के पैसे नहीं दिये हैं। सिलाई कारीगरों की तनखा से ई.एस.आई. के नाम पर 150 रुपये काटते हैं, टेलरों की पी.एफ. है ही नहीं। हैल्परों के वेतन से ई.एस.आई. व पी.एफ. के 300 रुपये काटते हैं। घर से लौटने में देरी पर नौकरी से निकाल देते हैं और किये काम के पैसे भी नहीं देते – कहते हैं कि एक महीने बाद नहीं मिलते।" ***ईस्टर्न मेडिकिट मजदूर :*** " उद्योग विहार स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में कैजुअल वरकरों को दिसम्बर की तनखा 14 जनवरी को दी। और, हम कैजुअल स्टाफ कहे जाते 500 लोगों को दिसम्बर का वेतन आज 22 जनवरी तक नहीं दिया है।"

फरीदाबाद में

के. के. स्पन पाइप मजदूर : "तिगाँव रोड, बल्लभगढ स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2400-2800 और ऑपरेटरों की 3000-3200 रुपये। रोज सुबह 8½ से रात 8 की ड्युटी और रात 2-3 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम सिंगल रेट से।"

ए.पी. फोरजिंग श्रमिक : "16/4 मथुरा रोड स्थित फैक्ट्री में तनखा देरी से देते हैं – दिसम्बर की आज 15 जनवरी तक नहीं दी है। गाली बहुत देते हैं।" ***गार्ड :*** "दूसरी मंजिल, बी-57 नेहरु ग्राउण्ड में कार्यालय वाली ***मयुर सेक्युरिटी सर्विस*** गार्डो से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। महीने के तीसों दिन ड्युटी, त्यौहार की भी छुट्टी नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के 3500 रुपये देते हैं।"

शाही एक्सपोर्ट मजदूर : "आई पी-1 सैक्टर-28 स्थित फैक्ट्री में ***गैप, ओल्ड नेवी, टारगेट, स्पिरिट, हुगो बॉस*** आदि के लिये माल बनता है। इन क्रेताओं के प्रतिनिधि जब फैक्ट्री में आते हैं तब मैनेजमेन्ट हम मजदूरों को दस्ताने, मुँह पर टाँगने के कपड़े, अग्निशमन तथा प्राथमिक चिकित्सा में प्रशिक्षित के बिल्ले देती है। उस समय मैनेजमेन्ट रसायन छिपा देती है, दाग हटाने की गन छिपा देती है, जिस रजिस्टर में हर घण्टे का उत्पादन लिखा जाता है उसे छिपा देती है और हमें कहती है कि पूछने पर बोलना कि ओवर टाइम नहीं होता। जबकि, स्थाई मजदूरों को भी लगातार 24 घण्टे फैक्ट्री में रोक लेते हैं, अक्टूबर से अप्रैल के दौरान तो महीने में 250 घण्टे तक ओवर टाइम.... इसे कम्प्युटर से हटा देते हैं। हर समय निर्धारित उत्पादन बहुत ज्यादा रहता है। टारगेट के चक्कर में चाय नहीं पी पाते, पानी भी नहीं पी पाते। पानी-पेशाब के लिये टोकन भी लेना होता है – 150 मजदूरों के बीच एक टोकन। कार्ड रख कर टोकन लेना और ऐसा नहीं करने पर दो दिन गेट रोक देते हैं। सुपरवाइजर गाली देते हैं, कार्ड छीन लेते हैं और टारगेट पूरा करने पर ही छुट्टी मिलती है। निर्धारित उत्पादन पूरा करने के लिये ड्युटी के बाद दो घण्टे अतिरिक्त रुकना पड़ता है तो उसके लिये कोई ओवर टाइम नहीं देते। तबीयत खराब होने पर भी छुट्टी नहीं देते और छोटी-छोटी बात पर माफीनाम लिखवाते हैं....... कुछ मजदूरों को रोना आ जाता है। अत्याधिक काम, ज्यादा समय लगातार काम से हम बीमार पड़ते रहते हैं।"

हरियाणा सरकार द्वारा 01.07.2008 से निर्धारित कम से कम तनखा : अकुशल मजदूर (हैल्पर) 3665 रुपये (8 घण्टे के 141 रुपये)

ग्लोबल कैपेसिटर श्रमिक : "30/8 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री के 400 मजदूरों में 300 की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। कम्पनी 10½ घण्टे को 8 घण्टे बताती है। नये हैल्पर को 2700 रुपये महीना देते हैं और भर्ती के लिये रिश्वत लेते हैं।" ***पोलीमेड वरकर :*** "सैक्टर-59 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में 1700 कैजुअल वरकर और एक ठेकेदार के जरिये रखे 300 मजदूर काम करते हैं। स्थाई मजदूर बहुत-ही कम हैं। ठेकेदार के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 2800 तथा ऑपरेटरों की 3250 रुपये और ई.एस.आई. व पी.एफ. 300 में 2-4 के हो सकते हैं।" ***(बाकी पेज तीन पर)***

ओसवाल इलेक्ट्रिकल्स कामगार : " 48 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 15 छोटे ठेकेदारों के जरिये रखे 200 मजदूरों में हैल्परों की तनखा 2000-2600 और मशीन चलाने वालों की 3000-3500 रुपये।"

श्री जी श्रमिक : " 593 सैक्टर-58 स्थित फैक्ट्री में ***शिवानी लॉक्स*** का जिंक प्लेटिंग का काम होता है। हैल्परों की तनखा 2400 रुपये, ई.एस.आई. नहीं।"

मितासो एप्लाइन्सेज कामगार : " 120 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2600 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

फ्रेन्ड्स ऑटो श्रमिक : "38ए तथा 52ए इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित पटे-कमानी बनाने वाली फैक्ट्रियों में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट रहती थी। ओवर टाइम सिंगल रेट से। नई फैक्ट्री में मई 08 से 8-8 घण्टे की दो शिफ्ट की और फिर 8 घण्टे की एक शिफ्ट। पुरानी फैक्ट्री में अक्टूबर 08 तक 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट चली और अब 8 घण्टे की एक शिफ्ट है। दोनों

यूनान में विप्लव

6 दिसम्बर को विद्यालय के एक छात्र की पुलिस की गोली से मृत्यु पर पूरे यूनान में दँगे भड़क उठे। दँगों ने बगावत का रूप ले लिया। विद्यालयों-विश्वविद्यालयों पर छात्रों ने कब्जे कर लिये। छात्रों-मजदूरों ने सरकारी इमारतों, रेडियो व टेलीविजन केन्द्रों, पार्टियों-यूनियनों के कार्यालयों पर कब्जे कर लिये। हजारों की सँख्या में लोग जगह-जगह पुलिस से भिड़े। क्रिसमस और नव वर्ष के लिये सजे व्यवसायिक केन्द्रों का हाल युद्ध में ध्वस्त क्षेत्रों जैसा हो गया। थानों को आग लगाई गई और सम्पन्नों से व्यापक स्तर पर सामान छीने गये। जनतन्त्र में मजदूरों-मेहनतकशों के खिलाफ व्यापक हिंसा में सहभागी यूनियनों, राजनीतिक पार्टियों, पादरियों, पत्रकारों और व्यवसाइयों ने जनतन्त्र-कानून-व्यवस्था-शान्ति-अहिंसा की दुहाइयों के संग दमन का ताण्डव किया। कई सप्ताह चले इस विप्लव ने संकट-मन्दी के मजदूर-मेहनतकश पक्ष में समाधान की राह पर कदम बढाये। जानकारियाँ हम ने "कम्युनिज्म" के जनवरी 09 अंक से ली हैं। सम्पर्क के लिये – B.P. 33, SAINT-GILLES, 1060 BRUXELLES, BELGIUM एवं <http: gci-icg.org>

16 दिसम्बर 08 के ***"एथेन्स में मजदूरों का छात्रों को एक खुला खत"*** के यूनानी से अंग्रेजी अनुवाद का अनुवाद देखिये :

आयु के भेद और आम दुराव तुम से गलियों में चर्चायें करना हमारे लिये कठिन बना रहे हैं इसलिये हम यह पत्र जारी कर रहे हैं।

हम में से अधिकतर अभी गँजे अथवा पेटू नहीं हुये हैं। हम 1990-91 के आन्दोलन का अंश हैं। तुम लोगों ने उसके बारे में सुना होगा। तब हम ने अपने विद्यालयों पर 30-35 दिन कब्जा किया था। उस दौरान सरकार ने एक अध्यापक को मार डाला था क्योंकि अध्यापक ने हमारी चौकीदारी करने की सौंपी गई भूमिका त्याग दी थी और सीमा पार कर हमारे संघर्ष में आन मिला था। अध्यापक की मृत्यु पर हम में जो किसी से मतलब नहीं रखते वो भी सड़कों पर उतर आये थे और दँगा किया था। तब हालाँकि हम ने "थानों को आग लगाओ..." गाया पर ऐसा करने का सोचा तक नहीं जबकि आज आप लोग इतनी सहजता से थानों को फूँक रहे हैं।

तो, आप हम से आगे चले गये हैं, जैसा कि इतिहास में सदा होता है। बेशक हालात में फर्क है। नब्बे के दशक के दौरान निजी सफलता की सम्भावना को परोसा गया और हम में से कुछ ने उसे निगल लिया। अब लोग इस परी कथा पर विश्वास नहीं कर सकते। तुम्हारे ज्येष्ठ बन्धुओं ने 2006-07 के छात्र आन्दोलन के दौरान हमें यह दिखाया और तुम तो सुनाने वालों के मुँह पर उनकी परी कथाओं को थूक रहे हो।

यहाँ तक बढिया है।

अब अच्छे और कठिन मामले आरम्भ होते हैं।

अपने संघर्षों और पराजयों से हम ने जो सीखा है वह तुम्हें बतायेंगे। पराजयों की बात इसलिये कि जब तक संसार हमारा नहीं होगा तब तक हम सदा पराजित ही होंगे। हम ने जो सीखा है उसे तुम जैसे चाहो प्रयोग कर सकते हो।

अकेले मत रहो। हमें बुलाओ, अधिक से अधिक लोगों को बुलाओ। हमें नहीं पता कि यह तुम कैसे कर सकते हो, तुम राह ढूँढ लोगे। तुम ने पहले ही अपने विद्यालयों पर कब्जे कर लिये हैं और तुम ने हमें बताया है कि इसका सबसे महत्वपूर्ण कारण यह है कि तुम्हें तुम्हारे स्कूल अच्छे नहीं लगते। बढिया है। चूँकि तुम ने उन पर कब्जे कर ही लिये हैं तो उनकी भूमिका बदलो। अपने कब्जों को अन्य लोगों के साथ साझा करो। अपने विद्यालयों को हमारे नये सम्बन्धों के निवास की पहली इमारतें बनने दो। उनका सबसे शक्तिशाली हथियार हमें बाँटना है। जैसे कि उनके थानों पर हमले करने से तुम नहीं डरते क्योंकि तुम एकजुट होते हो, वैसे ही हम सब के जीवन को मिल कर बदलने के लिये हमें बुलाने से भय मत खाओ।

किसी भी राजनीतिक संगठन की मत सुनो। जिसकी तुम्हें आवश्यकता है वह करो। लोगों पर भरोसा करो, अमूर्त-हवाई योजनाओं और विचारों पर विश्वास मत करो। लोगों के साथ सीधे सम्बन्धों पर भरोसा करो। अपने मित्रों पर विश्वास करो और अपने संघर्ष में शामिल अधिक से अधिक लोगों को अपने लोग बनाओ। उनकी मत सुनो जो कहते हैं कि तुम्हारे संघर्ष में राजनीतिक सामग्री- सार नहीं जिसे कि प्राप्त करना ही चाहिये। तुम्हारा संघर्ष ही सार है। तुम्हारे पास तुम्हारा संघर्ष ही है और इसे बढाना तुम्हारे हाथों में है। यह तुम्हारा संघर्ष ही है जो कि तुम्हारे जीवन को बदल सकता है, यानी तुम्हें और साथियों के साथ तुम्हारे वास्तविक रिश्तों को बदल सकता है। **(बाकी पेज तीन पर)**

जब नई बातों से वास्ता पड़े तब बढने से डरो मत। हम में से प्रत्येक के मस्तिष्क

सत्यम के लिये देखें
एनरॉन के बहाने

कम्पनियाँ किसी की नहीं होती। कम्पनियों का कोई मालिक नहीं होता। ऐसे में कम्पनियों का सुचारू संचालन कैसे सुनिश्चित किया जाये? विद्वानों ने नुस्खा दिया : चेयरमैन, मैनेजिंग डायरेक्टर, चीफ एग्जेक्युटिव अफसर आदि बड़े अधिकारियों को वेतन के एक हिस्से के रूप में कम्पनी के शेयर दिये जायें ताकि कम्पनी को मुनाफे में रखना और मुनाफे को बढाना साहबों के निजी स्वार्थ में हो। विश्व की बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ विद्वानों के नुस्खे पर अमल कर रही हैं और इसका चलन छोटी कम्पनियों में भी तेजी से बढ रहा है।

स्वार्थ की कुँजी कमाल कर रही है। अधिकतर कम्पनियाँ अपने बही-खातों में हेरा-फेरी कर रही हैं। हिसाब-किताब में नटबाजी कर मनमाफिक मुनाफे दिखाये जाते हैं। और, महीने के लाखों लेते साहब लोग शेयरों की सट्टेबाजी में करोड़ों जेब में डालते हैं।

इधर बिजली क्षेत्र की विश्व की एक महारथी, एनरॉन कम्पनी द्वारा स्वयं को दिवालिया घोषित कर देने ने पर्दों की कुछ परतें उठाई हैं।

अमरीका के राष्ट्रपति, इंग्लैण्ड के युवराज को चन्दे देती एनरॉन कम्पनी द्वारा यहाँ नेताओं-अफसरों को पुचकार कर पर्यावरण का कबाड़ा करती डाभोल बिजली परियोजना और उसकी बिजली के ऊँचे रेट लेना अखबारों की खबरों में रहे हैं। एनरॉन के बही-खातों की जाँच की जिम्मेदार ऑडिट क्षेत्र की मशहूर एन्डरसन कम्पनी रही है। लगातार ऊँचे मुनाफे दिखाती एनरॉन के दिवालियेपन ने "घोटाला" के शोर-शराबे के बीच एनरॉन व एन्डरसन कम्पनियों की जाँच के लिये कई संसदीय समितियाँ बना दी गई हैं। और जिक्र कर दें, अमरीकी संसदों के 248 सदस्य जाँच समितियों में हैं – दूध का दूध और पानी का पानी करने वाले इन 248 संसद सदस्यों में से 212 ने तो एनरॉन अथवा एन्डरसन कम्पनी से चन्दे लिये हैं!

खैर। मण्डी का भँवर महारथियों को नहीं पहचानता और एनरॉन को घाटे पर घाटा होने लगा। मुर्गी ने अण्डे देना बन्द कर दिया तो साहब लोगों ने मुर्गी को काट खाने का निर्णय लिया। एनरॉन और एन्डरसन के अधिकारियों ने बही-खातों की खिचड़ी में भारी मुनाफे दिखा कर एनरॉन शेयरों के सट्टा बाजार में भाव प्रति शेयर 4 हजार रुपये तक पहुँचा दिये। एनरॉन के 29 बड़े साहबों ने अपने शेयर बेच कर तब 5500 करोड़ रुपये अपनी जेबों में डाले। एनरॉन की एक शाखा के अध्यक्ष ने 1750 करोड़ रुपये और एनरॉन के चीफ एग्जेक्युटिव अफसर ने 500 करोड़ रुपये इस प्रकार प्राप्त किये। बुलबुला फूटने पर एनरॉन के शेयरों का भाव 4 हजार रुपये प्रति शेयर से लुढक कर दस-बारह रुपये प्रति शेयर पर आ गया।

कम्पनी के दिवालिया होने में भी साहबों ने चाँदी कूटी पर एनरॉन के हजारों कर्मचारियों की पेन्शनें भी डूब गई नौकरियाँ तो गई ही।

चन्द अन्य उदाहरण : कॉर्निंग कारपोरेशन के अध्यक्ष ने कम्पनी के अपने शेयर बेच कर 70 करोड़ रुपये जेब में डाले जिसके बाद शेयरों के भाव 85 प्रतिशत गिर गये; जे डी एस यूनिफेज के सह-अध्यक्ष द्वारा शेयर बेच कर 115 करोड़ रुपये जेब में डालने के बाद कम्पनी के शेयरों के भाव 90 प्रतिशत गिर गये; प्रोविडेन्शियल फाइनैन्स के उपाध्यक्ष ने अपने शेयर बेच कर 70 करोड़ रुपये जेब में डालने के बाद बताया कि बही-खाते ठीक से हिसाब नहीं दिखाते और इस पर 3 हजार रुपये प्रति शेयर का भाव गिर कर 200 रुपये प्रति शेयर हो गया;....

और, फ्रान्स में तो कम्पनियों के चेयरमैनों, मैनेजिंग डायरेक्टरों की भयंकर वित्तीय अपराधों में गिरफ्तारियाँ लगभग रुटीन सामान्य बात बन गई है।................ (फमस 166, अप्रैल 2002)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 *पोस्टल रजिस्ट्रेशन* L/HR/FBD/73-2011